IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक भारतीय अर्थव्यवस्था में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता

खूशबू कुमारी[1] एवं डॉ० शारदानन्द सहनी[2]

[1]शोध–छात्रा, विश्वविद्यालय अर्थशास्त्र विभाग, बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

[2]सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, रामेश्वर महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सारांश : वर्तमान में विश्व कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है, जिनके समाधान के लिए अनेक विचारधाराएँ जैसे कि अनेकवाद, पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद, माओवाद और नक्सलवाद उभरकर सामने आ रही हैं। ये विचारधाराएँ वैश्विक सोच को प्रभावित कर रही हैं। इसके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था में भूमंडलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण और राष्ट्रीयकरण जैसी नीतियाँ विकसित हो रही हैं। विकसित राष्ट्र विकासशील देशों पर अपनी नीतियों को थोपने की कोशिश कर रहे हैं, जिसके कारण राजनीतिक विरोध और शीत युद्ध का माहौल पूरे विश्व में फैला हुआ है। मानवता आज भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याओं से जूझ रही है। इन समस्याओं के समाधान के लिए जो नीतियाँ बनाई जा रही हैं, वे अधिकांशतः असफल हो रही हैं। नवीन आर्थिक नीति के प्रभाव से भारतीय अर्थव्यवस्था पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए देश की नई आर्थिक नीति में गांधीवादी अर्थशास्त्र का समावेश आवश्यक प्रतीत होता है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुराष्ट्रीय और कॉर्पोरेट कंपनियों के सामने मानव कल्याण की एक गंभीर चुनौती उत्पन्न हो रही है। भारतीय अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए गाँधीजी ने अनेक सुझाव दिए जिनमें ग्राम स्वराज्य, सर्वोदय और अन्त्योदय सिद्धांत प्रमुख है। वर्तमान अध्ययन हम गाँधीजी के विचारों को नवीन अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत है।

कूट शब्द : महात्मा गाँधी, अर्थव्यवस्था, पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद, वैश्विक विचारधारा, मानव कल्याण।

1. प्रस्तावना – वर्तमान में विश्व में यंत्रीकरण की गति अत्यधिक तेज हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप कई नकारात्मक प्रभाव सामने आ रहे हैं। मनुष्य यंत्रीकरण के माध्यम से सुविधाओं की ओर अग्रसर हो रहा है, किंतु इसके साथ नैतिक मूल्यों का क्षय भी हो रहा है। बाजारी विज्ञान मानव मनोवृत्तियों को आकर्षित कर रहा है। इस बाजारी प्रतिस्पर्धा में विनाशकारी प्रभाव उत्पन्न हो रहे हैं, जो मानवता और पृथ्वी के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, नई आर्थिक नीतियों और गांधीवादी अर्थशास्त्र की तुलना एवं एक–दूसरे के पूरक पहलुओं पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। प्रो. डी. एन. चतुर्वेदी ने उल्लेख किया है– "इस प्रकार राष्ट्रीय और वैश्विक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जिससे प्रलय की स्थिति उत्पन्न न हो। इसलिए गांधी जी के सर्वोदय विचारों का गहन अध्ययन करना आवश्यक है। आज विश्व और भारत के विचारक इसी बिंदु पर पहुँच चुके हैं। इन समस्याओं का समाधान गांधीवादी दृष्टिकोण से ही संभव है।"

गांधी जी ने इन समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रस्तुत किया। इन समस्याओं के मूल तत्वों को समग्र दृष्टिकोण से किसी ने नहीं देखा और न ही देखने की इच्छा जताई। गांधी जी ने हर समस्या को व्यक्तिगत स्वतंत्रता, नैतिकता, आध्यात्मिकता और भौतिकता के विभिन्न दृष्टिकोणों से अपने सर्वोदय के सिद्धांत के साथ संतुलित किया है और उनके कार्यक्रमों को निर्धारित किया है। इसे गांधी जी की समग्र अर्थनीति के रूप में जाना जाता है, जिसमें उन्होंने पाखाने से लेकर परमात्मा तक की विस्तृत चर्चा की है। गांधी जी के आर्थिक विचारों और सिद्धांतों को समय की

आवश्यकता के अनुसार मान्यता देते हुए जी. रामचन्द्रन ने यह स्पष्ट किया है कि "यदि गांधीवादी अर्थशास्त्र को सही तरीके से समझा जाए, तो इसमें हमें महान चुनौती और अवसर दोनों का सामंजस्य देखने को मिलेगा। आज के तेजी से बदलते संसार में गांधीवादी अर्थशास्त्र का संतुलन महत्वपूर्ण है।" आज के तेजी से परिवर्तित हो रहे विश्व में गांधीवादी अर्थशास्त्र का संतुलनकारी सिद्धांत पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय हो गया है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि विज्ञान और आध्यात्म, साथ ही उत्पादन और चरित्र के बीच समन्वय स्थापित किए बिना मानवता का भविष्य अंधकार में है। इतिहास के आवश्यक तत्वों की पृष्ठभूमि में हमें गांधीवादी अर्थशास्त्र को अर्थशास्त्र के संदर्भ में पुनः देखना और समझना आवश्यक है।''

(क) निजीकरण – निजीकरण का अर्थ सरकारी हस्तक्षेप की अनुपस्थिति से है। दूसरे शब्दों में, यह उद्योगों या पूंजीगत उपक्रमों पर निजी और व्यक्तिगत स्वामित्व की स्थिति को दर्शाता है। इसका एक अन्य पहलू यह है कि सार्वजनिक उपक्रमों में निजी निवेश को बढ़ावा दिया जाए। वर्तमान में, भारत में निजीकरण की प्रक्रिया को दीर्घकालिक राजकोषीय नीति, औद्योगिक लाइसेंस के सरलीकरण, आयात और निवेश में उदारीकरण, आय, उत्पादन और बिक्री कर में कमी, तथा विशेष क्षेत्रों में पूंजी निवेश को प्रोत्साहित करके आगे बढ़ाया जा रहा है। विदेशी निवेश और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में अभूतपूर्व वृद्धि को जन्म दिया। लेकिन, विश्वव्यापी आर्थिक मंदी का दुष्प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था पर गंभीर रूप से पड़ने लगा। इस स्थिति के लिए निजीकरण को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसका मुख्य उद्देश्य केवल लाभ अर्जित करना है।

निजीकरण के संदर्भ में गांधीवादी अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता को समझना आवश्यक है। गांधी जी का निजीकरण पर दृष्टिकोण अद्वितीय है। उनके अनुसार, व्यक्तिगत और सरकारी नियंत्रण की परख के लिए अहिंसा को आधार बनाया गया है। उन्होंने यह भी देखा कि व्यक्तिगत स्वामित्व अहिंसा के सिद्धांत के अनुरूप नहीं है, और सार्वजनिक स्वामित्व भी अंततः हिंसा के सिद्धांत पर निर्भर करता है। इसलिए, उन्होंने संरक्षकता के सिद्धांत को अधिक महत्व दिया। उनका यह मत है कि "राज्य की स्वामित्व व्यवस्था व्यक्तिगत स्वामित्व से बेहतर है, और इसलिए इसके खिलाफ आपत्ति उठाई जा सकती है। राज्य संगठित और केंद्रीकृत हिंसा का प्रतीक है। व्यक्ति की आत्मा होती है, जबकि राज्य एक निर्जीव यंत्र है, जिसे कभी भी हिंसा छोड़ने के लिए राजी नहीं किया जा सकता, क्योंकि इसकी उत्पत्ति ही हिंसा से हुई है। इसलिए गांधी जी संरक्षकता के सिद्धांत को प्राथमिकता देते थे।" गांधी जी रूस में राज्य द्वारा नियंत्रित उद्योगों, अर्थात् ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें उत्पादन और वितरण का नियंत्रण राज्य के हाथ में होता है, को संदेह की दृष्टि से देखते थे, क्योंकि यह व्यवस्था बल पर निर्भर करती है। इसलिए उनका कहना था कि यह उन्हें कहीं न कहीं ले जाएगी। यह आवश्यक नहीं है कि राज्य केवल हिंसा पर निर्भर हो, भले ही सिद्धान्त में ऐसा दर्शाया गया हो, परन्तु व्यवहार में अधिकांशतः अहिंसा पर आधारित राज्य की आवश्यकता होती है। इसलिए, उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र की स्थापना पर जोर दिया।

(ख) उदारीकरण – वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति ऐसी है, जैसे किसी वृक्ष की जड़ें कमजोर हो रही हों, जबकि उसकी शाखाओं को संवारने का प्रयास किया जा रहा हो। गांधी जी ने इसके विपरीत भारतीय अर्थव्यवस्था की जड़ों को सुदृढ़ करने का सुझाव दिया। उदारीकरण की नीति को अपनाने के बावजूद, भारतीय अर्थव्यवस्था वर्षों से बेरोजगारी और गरीबी के गंभीर संकट का सामना कर रही है, और आर्थिक उदारता ने इस संकट को और भी बढ़ा दिया है। इसका मुख्य कारण यह है कि महात्मा गांधी ने अपने आर्थिक सिद्धांत में ट्रस्टीशिप, अपरिग्रह, सर्वोदय और ग्रामीण स्वराज्य के माध्यम से एक मार्ग प्रस्तुत किया था। इस दृष्टिकोण को देश की उदारीकरण नीति में नजरअंदाज किया गया है, क्योंकि गांधी जी द्वारा प्रस्तावित स्वदेशी की अवधारणा वर्तमान पीढ़ी के लिए अव्यवहारिक और पुरानी समझी जा रही है। जबकि वास्तविकता यह है कि संतुलित विकास और व्यवस्था जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करना केवल निजी क्षेत्र के प्रयासों से संभव नहीं है। मानव संसाधनों का तीव्र विकास, लोगों की सुरक्षा, आधारभूत सुविधाओं का प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण के लिए सार्वजनिक भागीदारी के बिना अर्थशास्त्र का स्वस्थ होना संभव नहीं है।

उदारीकरण की जो प्रक्रिया विदेशों से आई है, उसका उद्देश्य आर्थिक दासता को बढ़ावा देना और भारत में आत्म–निर्भरता को समाप्त करना है, क्योंकि भारत एक विशाल बाजार है। गांधी जी के विचारों के अनुसार उदारता का असली अर्थ ट्रस्टीशिप के सिद्धांत में निहित है।

(ग) भूमण्डलीकरण – वर्तमान समय में एक नई विचारधारा तेजी से वैश्विक स्तर पर फैल रही है, जो यह दर्शाती है कि विश्व सरकार की अवधारणा आज सूचना प्रौद्योगिकी में आई तीव्र क्रांति के कारण पूरी दुनिया को एकीकृत कर रही है। आज, विश्व के किसी भी कोने में होने वाली घटनाओं की जानकारी कुछ ही क्षणों में पूरे संसार में फैल जाती है। भूमण्डलीकरण के प्रभाव में भारतीय अर्थव्यवस्था किस प्रकार प्रभावित हो रही है, इसे समझना आवश्यक है। इसमें रोजगार की गंभीर उपेक्षा, श्रम शक्ति के 90 प्रतिशत से अधिक का असंगठित क्षेत्र में होना, और निजी कंपनियों के बढ़ते लाभ एवं पूंजीगत लाभ को बढ़ावा देना इत्यादि।

गाँधी जी के विचारों के अनुसार, भूमण्डलीकरण का अवधारणा अत्यंत व्यापक और विशाल है, जिसके आदर्श को प्राप्त करने में विश्व को कई सदियाँ लगेंगी। हालाँकि, गाँधी जी ने इसकी नींव रख दी है। वर्तमान में, भारत सहित विश्व में जो भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है, वह विकसित देशों की स्वार्थी नीतियों का परिणाम है, जिसके कारण देश में आत्मनिर्भरता की कमी उत्पन्न हो रही है। गाँधी जी के विचारों में वैश्वीकरण का सिद्धांत भी समाहित है, उनके दृष्टिकोण इतने व्यापक हैं कि वे ब्रह्मांडीय एकता की दिशा में अग्रसर होते हैं। उनका एक प्रसिद्ध विचार था– "सभी भूमि गोपाल की है"। देश और राज्यों की सीमाएँ मानव निर्मित हैं और इन सीमाओं के कारण अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, जिनका उत्तरदायित्व पूरी तरह मानव जाति पर है, जिसने अस्वाभाविक व्यवस्थाओं को अपनाया है। मेरे विचार में, गाँधी जी ने वैश्विक स्तर पर एक आदर्श दृष्टिकोण प्रस्तुत किया था कि यदि हम संपूर्ण विश्व को एक इकाई के रूप में देखें, तो सभी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। आज का वैश्वीकरण गाँधी जी के संपूर्ण विश्व एकता के विचार का एक अंश मात्र है।

(ग) यंत्रीकरण तथा औद्योगिकरण – भारत में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत ब्रिटिश साम्राज्य की उपनिवेशी स्थिति में हुई, लेकिन उस समय भारत में बड़े उद्योगों की स्थापना नहीं हुई थी। इसके बजाय, भारत से कच्चा माल ब्रिटिश उद्योगों के लिए भेजा जाता था। यहाँ की कपास का उपयोग मैनचेस्टर में कपड़ा बनाने के लिए किया जाता था, जो भारत और अन्य देशों में बेचा जाता था। नवीन आर्थिक नीति के अंतर्गत औद्योगीकरण में तीव्र वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप कारखानों में विशाल मशीनें मानव शरीर को विकृत कर रही हैं। हमारी पारंपरिक कलाओं और शिल्पों का विनाश हो रहा है। वर्तमान में औद्योगीकरण बेरोजगारी, कृत्रिम मांग, और असामर्थ्य का विस्तार कर रहा है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग और सामाजिक विपन्नता की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। महात्मा गांधी ने इस समय को देखकर यह महसूस किया कि भारतीयों की गरीबी और कठिनाइयों का मुख्य कारण यूरोप और इंग्लैंड का औद्योगीकरण था। गाँधी जी को यह स्वीकार्य नहीं था कि बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण से विशेषाधिकार और एकाधिकार उत्पन्न हो। वे मानते थे कि यदि कोई वस्तु सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं है और सामान्य जनता को उसमें भागीदारी नहीं मिलती, तो उसे निषिद्ध माना जाना चाहिए। इसलिए, उन्होंने कहा कि हमें अपने सभी प्रयासों को गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने पर केंद्रित करना चाहिए। उनका मानना था कि वस्तुओं का निर्माण उपयोग के लिए होना चाहिए, न कि बिक्री के लिए। यदि गाँवों में चलने वाले उद्योगों की यह विशेषता बनी रहे, तो गाँवों को आधुनिक उपकरणों और यंत्रों का उपयोग करने की अनुमति दी जा सकती है, बशर्ते उनका उपयोग दूसरों का शोषण करने के लिए न किया जाए। इस प्रकार, गाँधी जी का विचार था कि औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप जटिलता बढ़ती है, अधिक उत्पादन से प्रकृति का नुकसान होता है और लाभ तथा एकाधिकार की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है।

गाँधी जी ने औद्योगीकरण के दुष्परिणामों को ध्यान में रखते हुए इस प्रक्रिया पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें धन के प्रवाह को गाँवों की ओर मोड़ना चाहिए। वे गाँवों में उद्योगों की स्थापना के पक्षधर थे, लेकिन औद्योगीकरण के पारंपरिक अर्थ में नहीं, अर्थात् वे नई मिलों की स्थापना कर उनकी संख्या बढ़ाने के इच्छुक नहीं थे। उनकी स्वाभाविक अर्थव्यवस्था में बड़े पैमाने पर उत्पादन करने वाले यंत्र उद्योग और गाँवों के बीच संतुलन स्थापित किया जाएगा। ऐसे बड़े उद्योग जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं, उन्हें केंद्रित किया जा सकता है। गाँधी जी का मानना था कि जिन वस्तुओं का उत्पादन गाँवों में आसानी से किया जा सकता है, उनका बड़े पैमाने पर यंत्र उद्योग के माध्यम से उत्पादन करने के खिलाफ थे।

(घ) कृषि एवं ग्राम स्वराज्य – नवीन आर्थिक नीति लागू होने के डेढ़ दशक से अधिक समय बीत चुका है, और इस अवधि में भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभावों के संबंध में कई विचार और तथ्य सामने आए हैं। इन तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि नवीन आर्थिक नीति भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में किसी भी प्रकार से सहायक नहीं हो रही है। विशेष रूप से कृषि क्षेत्र के विकास में तो इसका योगदान नगण्य है। इन तथ्यों के गहन अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि विश्व व्यापार संगठन के मार्गदर्शन में चलने वाली नवीन आर्थिक नीति वास्तव में विकसित देशों के हितों की पूर्ति का एक साधन है। भारत जैसे कृषि आधारित अर्थव्यवस्था वाले देशों के लिए इन नीतियों के माध्यम से समृद्धि प्राप्त करना संभव नहीं लगता।

गाँधी जी का विचार था कि आर्थिक विकास का मुख्य आधार कृषि है। किसी भी देश की प्रगति उसी अनुपात में संभव है, जितना वहाँ खाद्य पदार्थ और कच्चा माल उपलब्ध हो। उनका कहना था कि कृषि उत्पादन में वृद्धि के बिना न तो व्यापार सुचारू रूप से चल सकता है और न ही हस्तशिल्प। गाँधी जी यह समझते थे कि भारत का विकास कृषि पर निर्भर है, जिस पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और नैतिक ढांचे का निर्माण किया जा सकता है। कृषि और राष्ट्रीय आय के बीच एक विशेष संबंध है। यदि कृषि असफल होती है, तो आर्थिक प्रगति प्राप्त करना कठिन हो जाएगा। महात्मा गांधी जी, जो भारतीय संस्कारों से प्रभावित थे और कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे, ने अपनी सभी प्रेरणाएँ कृषि और ग्रामीण जीवन से प्राप्त कीं।

(ड.) विदेशी पूँजी निवेश एवं विदेशी व्यापार – भारत ने वैश्वीकरण की नीति के तहत आर्थिक सुधार की प्रक्रिया में विदेशी मुद्रा निवेश को एक प्रमुख साधन के रूप में अपनाया है, जिसे विकास की वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। गाँधी जी का यह विचार था कि विदेशी प्रौद्योगिकी को अपनाना संभव है, किंतु इसका नियंत्रण भारतीयों के हाथ में होना चाहिए। उनका कहना था कि विदेशी पूंजी और कौशल का उपयोग करना एक बात है, जबकि विदेशी कंपनियों को बढ़ावा देना एक अलग विषय है। इस विचार को और स्पष्ट करते हुए गाँधी जी ने कहा, ''मैं विदेशी पूंजी का विरोध नहीं करूंगा, और न ही विदेशी विशेषज्ञों के उपयोग का विरोध करूंगा, यदि हमें उनकी आवश्यकता है और वे भारत में उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन यह आवश्यक है कि यह पूंजी और कौशल पूरी तरह से भारतीयों के नियंत्रण, निर्देशन और प्रबंधन में हो, और इसका उपयोग भारतीय हित में किया जाए। विदेशी पूंजी और कौशल का उपयोग एक बात है, जबकि विदेशी औद्योगिक प्रतिष्ठानों को यहाँ बढ़ने और विकसित होने का अवसर देना एक अलग बात है।''

गाँधी जी इस बात से अवगत थे कि विदेशी कंपनियों के कारण भारत गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा गया और इन्हीं कंपनियों ने भारतीय उद्योगों को नष्ट करके अपनी समृद्धि की नींव रखी। उन्होंने कहा, ''यह बिना किसी अतिशयोक्ति के कहा जा सकता है और इसका कोई विरोध नहीं कर सकता कि इंग्लैंड ने अपनी समृद्धि का आधार भारत में व्यापार और उद्योगों के विनाश पर स्थापित किया है। लंकाशायर की प्रगति के लिए भारत के घरेलू उद्योगों का समाप्त होना आवश्यक था।''[17]

(च) स्वदेशी – भारत की आर्थिक नीतियों में स्वदेशी दृष्टिकोण को अपनाने का विषय आधुनिक समय में अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया है। इस पर आर्थिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में बहस चल रही है कि क्या भारत को स्वदेशी नीति को प्राथमिकता देनी चाहिए। वर्तमान आर्थिक नीति में उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण की नीतियों को तेजी से लागू किया गया है, जिससे यह स्पष्ट हो रहा है कि स्वदेशी तत्वों को कम किया जा रहा है। उपभोग के क्षेत्र में न केवल स्वदेशी कंपनियाँ और कारखाने कार्यरत हैं, बल्कि विदेशी कंपनियाँ भी तेजी से देश के उत्पादन में अपनी भागीदारी बढ़ा रही हैं, और उनके द्वारा निर्मित उत्पादों की खपत भारत में हो रही है।

गाँधी जी के आर्थिक दृष्टिकोण में स्वदेशी का जो स्वरूप है, उसमें निजीकरण, विदेशी निवेश और भूमण्डलीकरण की नीतियों का रचनात्मक पहलू शामिल है। उन्होंने यह कहा कि– ''स्वदेशी की तीन प्रमुख शाखाएँ हैं– धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक। आर्थिक संदर्भ में स्वदेशी का तात्पर्य है कि हम केवल अपने निकटवर्ती पड़ोसियों द्वारा निर्मित वस्तुओं का ही उपयोग करें और उन उद्योगों को सक्षम बनाकर तथा जहाँ आवश्यक हो, वहाँ उन्हें पूर्ण करके उनकी सेवा करें।''[23] इस दृष्टिकोण से विचार करने पर उपरोक्त नीतियों का तात्पर्य यह है कि भारत में निजीकरण की प्रक्रिया को अपनाकर उद्योगों में पूर्णता लाने का प्रयास किया जाए। विदेशी तकनीक और निवेश को भारत के उद्योगों की सीमाओं को पार करने के लिए सहायक के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। भूमण्डलीकरण की नीति को भारत

की समस्याओं के समाधान के लिए लागू किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में, भूमण्डलीकरण नीति का उपयोग भारत में विदेशी उत्पादों और कंपनियों के लिए एक बाजार के रूप में किया जा रहा है। यह नीति महात्मा गांधी के विचारों के अनुरूप नहीं है। गांधी जी के दृष्टिकोण में स्वदेशी का अर्थ इतना व्यापक है कि इसमें पड़ोसी की सेवा से लेकर वैश्विक सेवा तक का समावेश है। उनका कहना था कि वास्तव में स्वदेशी के सिद्धांत में अपने और पराये के बीच भेद करने की कोई गुंजाइश नहीं है। अपने पड़ोसी की सेवा करना, संपूर्ण मानवता की सेवा करना है।

(छ) उपभोक्तावादी – वर्तमान में नवीन आर्थिक नीति में उपभोक्तावाद का प्रभाव बढ़ गया है, जिसके परिणामस्वरूप आधुनिक अर्थशास्त्री उपभोग, अर्थात् माँग और पूर्ति पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। महात्मा गांधी की आर्थिक दृष्टि उत्पादन पर आधारित थी। नवीन आर्थिक नीति में गांधी जी के सिद्धांतों का पालन नहीं किया गया, जिसके कारण न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण विश्व उपभोक्तावाद की समस्या से जूझ रहा है। पश्चिमी देशों में अपनाए गए शहरीकरण और औद्योगीकरण के मार्ग का अनुकरण तीसरी दुनिया के शासक वर्ग द्वारा किया जा रहा है, जिससे संसाधनों का अत्यधिक अपव्यय हो रहा है। इस उपभोक्तावादी नीति के कारण विश्व में सामाजिक विषमता के स्तर पर असंतुलन उत्पन्न हो गया है। हमारी अनजानियों के बावजूद, आर्थिक शोषण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ रही है।

गाँधी जी की आर्थिक दृष्टि उपभोग पर आधारित नहीं, बल्कि उत्पादन पर केंद्रित है। इसका मुख्य आधार यह है कि श्रम करना मानव की मूलभूत आवश्यकता है, और श्रम के बाद ही उपभोग की ओर अग्रसर होता है। यदि हर व्यक्ति उत्पादन में संलग्न हो जाए, तो इससे जीवन स्तर में सुधार होगा और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होगी, जिससे मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन उपलब्ध होंगे। गाँधी जी का मानना था कि हर व्यक्ति को श्रम करना चाहिए। उनका सिद्धांत यह था कि गाँवों की समृद्धि इसी उत्पादन आधारित आर्थिक व्यवस्था पर निर्भर करती है, जो एक गुणात्मक जीवन की स्थापना करती है। वर्तमान में, नई आर्थिक नीतियों के तहत बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बड़े उद्योग स्थापित कर रही हैं और पूंजी प्रधान विकसित तकनीकों को अपनाकर तेजी से उत्पादन कर रही हैं, जिसके कई नकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। इन परिणामों का समाधान आवश्यक है।

(ज) विकेन्द्रीकरण – नवीन आर्थिक नीति के अंतर्गत अपनाई गई नीतियों के कारण देश में बड़े उद्योगों का केंद्रीकरण एक प्रमुख समस्या बन गया है। उद्योगपतियों का मुख्य उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम करना होता है, जिसके चलते वे अपने उद्योगों की स्थापना उन स्थानों पर करते हैं जहाँ उत्पादन के सभी संसाधन आसानी से उपलब्ध हों। इस प्रकार, भूमंडलीकरण की नीति के माध्यम से विकसित देश इन उद्योगों में अपनी निवेश पूंजी लगाते हैं ताकि उनका लाभ अधिकतम हो सके। इसका परिणाम यह होता है कि एक ओर आधारभूत उद्योगों की अनदेखी होती है, जबकि दूसरी ओर, देश उन वस्तुओं का उत्पादन करता है जिसमें वह विकासशील देशों की तुलना में अधिक कुशल है। इस स्थिति में विकासशील देशों के उद्योग प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं पाते और अंततः समाप्त हो जाते हैं। इस प्रकार, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ एक ओर देशी उद्योगों को नष्ट करती हैं और दूसरी ओर पूंजी का संचय करती हैं। ऐसी परिस्थितियों में गरीबी और अमीरी के बीच की खाई दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, साथ ही क्षेत्रीय असंतुलन को भी बढ़ावा मिल रहा है। महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों का मुख्य सिद्धांत विकेन्द्रीकरण है।

गांधी जी मानव स्वतंत्रता के समर्थक थे। उनका कहना था कि हमारा उद्देश्य लोगों को सुखी बनाना और उनकी बौद्धिक तथा नैतिक, अर्थात आध्यात्मिक उन्नति को सुनिश्चित करना है। यह उद्देश्य विकेन्द्रीकरण के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। गाँधी जी ने औद्योगीकरण के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए ग्राम स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की थी। उनका विश्वास था कि गाँव को एक विकास की इकाई के रूप में उभरना चाहिए। मेरा मानना है कि गाँधी जी के इन विचारों के माध्यम से पलायन की समस्या को नियंत्रित किया जा सकता है।

(झ) बेरोजगारी – बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने के लिए यह आवश्यक है कि उन कारणों की पहचान की जाए जो बेरोजगारी को जन्म देते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण किया गया। इन योजनाओं के अंतर्गत रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिए सरकारी प्रयास किए गए, किंतु सरकार की आर्थिक नीतियाँ देश की वास्तविकताओं के अनुरूप नहीं होने के कारण बेरोजगारी की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। देश में बेरोजगारी की समस्या गंभीर रूप धारण कर रही है। इस प्रकार, पंचवर्षीय योजनाएँ और

सरकारी स्तर पर रोजगार सृजन के कार्यक्रम पूर्ण रूप से रोजगार की स्थिरता स्थापित करने में असफल सिद्ध हो रहे हैं। इसके पीछे एक महत्वपूर्ण तर्क यह है कि भारत की नई आर्थिक नीति में अपनाई गई रणनीतियाँ देश और काल की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं हैं, जिसके कारण बेरोजगारी में कमी आने के बजाय वृद्धि हो रही है।

गाँधी जी की विचारधारा के अनुसार, ''बेरोजगारी को समस्या नहीं माना जाता है, क्योंकि उन्होंने श्रम व्रत पालन के सिद्धांत को महत्वपूर्ण बताया है। उनके लिए बिना शारीरिक श्रम के भोजन करना अनैतिक है। उन्होंने यह भी कहा कि चरखा न केवल रोजगार का साधन है, बल्कि यह अन्य उद्योगों के विकास की संभावनाएँ भी प्रस्तुत करता है। गाँधी जी ने एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था की परिकल्पना की है जो सघन कृषि, साग–सब्जी, फल–फूल और पशुपालन पर आधारित सहकारी प्रयासों पर केंद्रित होगी। इस कृषि में बड़े पैमाने पर मशीनों का उपयोग नहीं होगा, बल्कि सहायक कुटीर उद्योगों का विकास होगा। पशु और मानव शक्ति का समुचित उपयोग और संरक्षण किया जाएगा। ग्रामोद्योग का समुचित विकास होगा, जिसमें चरखा और खादी का प्रमुख स्थान होगा। सभी के लिए एक समृद्ध और स्वाभिमानी जीवन की स्थापना होगी।''[31]

2 निष्कर्ष : गांधी की आर्थिक विचारधारा पर कई लेखन, चर्चाएँ और विमर्श हुए हैं। लेकिन जब इसे वास्तविकता में लागू करने की बात आती है, तो इसे अक्सर अव्यवहारिक और काल्पनिक के रूप में आलोचना का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, गांधी की ट्रस्टीशिप की अवधारणा गैर–स्वामित्व की मांग करती है, जिसमें व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं से अधिक अपनी संपत्ति और आय को त्यागने की अपेक्षा की जाती है, ताकि आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की भलाई सुनिश्चित की जा सके। हालांकि, गैर–स्वामित्व और ट्रस्टीशिप का यह सिद्धांत व्यावहारिकता के दृष्टिकोण से समझ में नहीं आता, क्योंकि व्यक्ति सामान्य जीवन में अपनी संपत्ति से गहरे जुड़े होते हैं। गांधी और उनके अनुयायी भी संपत्ति के प्रति इस लगाव और इसके संचय के पीछे के मूल कारणों को समझने में असफल रहे हैं।

समकालीन विश्व में कुछ चुनिंदा पूंजीपतियों ने आर्थिक संसाधनों पर नियन्त्रण कर लिया है, वहीं दूनिया का एक बड़ा भाग नारकीय जीवन जीने पर विवश है। ऐसे में गांधी द्वारा सुझाया गया प्रन्यास सिद्धान्त बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो उठता है। यह पूंजीवाद की बुराईयों का अहिंसक प्रतिकार प्रस्तुत करता है। इसके अनुसार पूंजीपतियों के ह्रदय परिवर्तन का प्रयत्न किया जाए ताकि वे अपने नियंत्रण में आने वाली सम्पत्ति को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति न समझे बल्कि उसे जनता की धरोहर समझकर अपने–आपको उसका न्यासधारी या संरक्षक समझे और उसका उपयोग सम्पूर्ण समाज की उन्नति एवं कल्याण में करने को तत्पर हो। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि समाज उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में उद्यमशील और प्रतिभाशाली व्यक्तियों की योग्यता से तो पूरा फायदा उठाएगा, परंतु सम्पत्ति से पैदा होने वाले शोषण और अन्याय से मुक्त रहेगा। प्रन्यास सिद्धान्त के द्वारा गांधीजी पूंजीवादी व साम्यवादी दोनों व्यवस्था के दोषों को दूर करते हैं व आर्थिक समानता की स्थापना पर बल देते हैं आज भी समाज में बिल गेट्स, मार्क जकरबर्ग, अजीम प्रेमजी, वारेन बफेट जैसे कई उद्योगपति हैं जो अपनी आय का बड़ा हिस्सा समाज सेवा में खर्च करते हैं। इसी प्रकार भारत सरकार के द्वारा भी 2013 में कार्पोरेशन सोशल रिस्पोन्सबिलिटी कानून पारित किया गया है जिसके अनुसार एक कम्पनी को अपनी कुल शुद्ध आय का कम से कम 2 प्रतिशत भाग सामाजिक कार्यों पर खर्च करना होता है।

इस प्रकार समकालीन विश्व में उत्पन्न हुयी विभिन्न आर्थिक समस्याओं का हल गांधीवादी प्रतिमान के अंतर्गत मिलता है। क्योंकि वैश्विक अन्य सभी प्रतिमान भौतिक विकास पर आधारित हैं जबकि गांधीजी का आर्थिक प्रतिमान नैतिक विकास पर बल देता है। सत्य व अहिंसा इसके केन्द्र में है। यह समावेशी विकास का प्रतिमान है अतः सभी समस्याओं का व्यावहारिक हल प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची

[1] डी. एन. चतुर्वेदी, गांधी जी के आर्थिक वैज्ञानिक व्वहारिक चिन्तन, पृ० सं० 37

[2] जी० रामचन्द्रन, ''गांधीवादी अर्थशास्त्र का मर्म', खादी ग्रामोद्योग कमीशन, अक्टूबर 1969, पृ० 33

[3] प्रो0 बी0 एएम0 शर्मा, डॉ0 रामकृष्णदत्त शर्मा– गाँधी दर्शन के विविध आयाम, पृ0 155, प्रकाशक– राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपूर ।

[4] भारतीय अर्थव्यवस्था, प्रतियोगिता दर्पण, अतिरिकतांक, 2009, पृ० 292

[5] दूधनाथ चतुर्वेदी, गाँधी जी के आर्थिक– वैज्ञानिक चिन्तन, पृ०सं० 547

[6] एस० एम० देसरदा, लेख उपभोक्तावाद–गाँधीवादी नजरिया, जनमोर्चा, समाचारपत्र

[7] प्रो० राजाराम शास्त्री, अपरिग्रह–निबंध–गाँधी जी के एकादश व्रत

[8] परहरिदास पारेख, मानव अर्थशास्त्र, पृ० सं० 557

[9] शोध छात्रा– रूचि श्रीवास्तव, निर्देशक– डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी, ''आर्थिक नीतियों में गाँधी विचार की प्रासंगिकता', पृ० सं० 431, 2002

[10] किशोर लाल मशरूवाला, गाँधी विचार दोहन, पृ० सं० 124

[11] नरहरिदास द्वारका पारेख, मानव अर्थशास्त्र, पृ० सं०–547